सीखना कक्षा के बाहर भी हो सकता है!

टिना

महामारी के दौर में बच्चों की पढ़ाई का बहुत ज़्यादा नुक़सान हुआ है। इस नुक़सान की भरपाई के लिए तरह-तरह के प्रयास किए गए, जो आज भी जारी हैं। एक ऐसे ही प्रयास का अनुभवपरक व योजनाबद्ध चित्रण इस लेख में है। यह प्रयास गर्मी की छुट्टियों में लगने वाले सीखना-सिखाना शिविरों के दौरान किया गया। लेखिका बताती हैं कि इन शिविरों में हर दिन को सर्कल टाइम, भाषा गतिविधि, गणित गतिविधि और फ़न टाइम में बाँटकर इस तरह की सीखने-सिखाने और खेल की विभिन्न गतिविधियाँ की गईं। जिनसे कक्षा की जड़ता कमतर हो। वे बच्चे भाषाई व गणितीय कौशल सीखने की ओर आगे बढ़ें। इन गतिविधियों में, कार्यपत्रकों में रंग भरना, कहानी के पात्रों के चित्र बनाना, चित्रों पर प्रतिक्रिया देना, क्ले मॉडेलिंग, थम्ब आर्ट, नाटक करना, प्ले बॉक्स और पज़ल्स के साथ खेलना, कविता-कहानियों की प्रस्तुति, आदि शामिल थीं। इस दौरान बच्चों का मूल्यांकन शिक्षकों की मदद से मौखिक रूप से किया गया। -सं.

पृष्ठभूमि

हम सभी जानते हैं, ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान बच्चों का स्कूल से नाता टूट जाता है। साथ ही, हम सबने पिछले सालों में कोविड जैसी महामारी का भी सामना किया था। इस महामारी के समय स्कूल बन्द ही थे। खुलने के बाद भी वे काफ़ी समय तक अनियमित ही रहे। इन्हीं स्थितियों, और इनसे बच्चों की पढ़ाई में हुए नुक़सान को समझते हुए, हमने सोचा कि क्यों न गर्मी की छुट्टियों का कुछ नए तरीक़े से इस्तेमाल किया जाए, ताकि बच्चों का सीखना भी जारी रह सके और उनके लर्निंग लॉस की भरपाई भी की जा सके। लक्ष्य यह भी था कि ग्रीष्मकालीन शिविर सीखने की प्रक्रिया में समुदाय को शामिल करने के उदाहरण के रूप में विकसित हो। समुदाय से गहरा रिश्ता सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में सुधार की दिशा में बढ़ता एक क़दम है। इसके लिए शिविर की योजना बनाई गई।

शिविर की तैयारी

गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के साथ हुए इस 10-12 दिन के शिविर को 'सीखना-सिखाना केन्द्र' नाम दिया गया था। केन्द्र शुरू करने से पहले ही हमने इस बारे में शाला प्रमुख, गाँव के प्रमुखों, सरपंच और शिक्षक साथियों से विस्तृत चर्चा की। ग्रीष्मकालीन अवकाश के बावजूद, शिक्षक साथी स्वेच्छा से इस केन्द्र में शामिल होने के लिए तैयार हुए। बातचीत के बाद सभी इच्छुक शिक्षक साथियों के साथ एक कार्यशाला की गई। इस कार्यशाला में कई मुद्दों पर चर्चा हुई। मसलन, ऐसे शिविर जिनमें बहुत-से स्तरों वाले बच्चे होंगे, उन्हें सुगमता से कैसे चलाया जाएगा; अगले 12 दिनों में हमें क्या करना है; किस-किस तरह की गतिविधियाँ करनी हैं; आदि। यह चर्चा भी की गई कि हम बच्चों का मूल्यांकन कैसे करेंगे, ताकि यह समझ सकें कि वे किस स्तर पर हैं, और हमें उनके साथ क्या और कैसे काम करने की ज़रूरत है। इस तरह,

हमने इन 12 दिनों में दो मूल्यांकन, एक शुरू में और दूसरा आख़िर में, करने की योजना बनाई। इसी कार्यशाला में हमने इस बात पर भी विस्तार से चर्चा की कि हर दिन के अनुसार हमें क्या-क्या सामग्री चाहिए होगी और कौन-कौन-सी अधिगम सामग्री बनाने की ज़रूरत है।

सीखना-सिखाना केन्द्र के हर दिन को हमने 4 हिस्सों में बाँटा– सर्कल टाइम, भाषा गतिविधि, गणित गतिविधि, और फ़न टाइम। इन चार हिस्सों का नियोजन कुछ ऐसे किया गया था कि सभी गतिविधियों के लिए आधा-आधा घण्टे का समय मिल सके। अगर कोई गतिविधि आधा घण्टे से ज़्यादा चलती है, तब उस दिन उसके बाद वाली गतिविधि को अगले दिन करने का प्रयास किया जाए। पूरे दिन की गतिविधि और सत्र योजना शिक्षक साथियों की सहमति से बनी। इस योजना में यह ध्यान रखा गया कि हर स्तर के बच्चों को सीखने में मदद मिल सके; डर का माहौल न हो; और बच्चे ग़लती कर सकें व सहजता से सीखने की ओर बढ़ सकें। सीखना-सिखाना केन्द्र के लिए सुबह या शाम का समय तय किया गया था, ताकि गर्मी का असर ज़्यादा न हो। हमने कुछ और मूलभूत सुविधाओं की भी व्यवस्था की, ताकि बच्चों का सीखना निर्बाध और सुविधाजनक तरीक़े से चलता रह सके। जैसे– पीने के पानी की उपलब्धता, हवादार कमरा, आसपास छायादार पेड़, शौचालय, आदि।

शिविर में गाँव, शहर, निजी और सरकारी, सभी स्कूलों के बच्चे शामिल थे। लेकिन मुख्यत: ग्रामीण अंचल के बच्चे इस केन्द्र में शामिल हुए। ये बच्चे सुबह-सुबह ही केन्द्र आ जाते थे। गर्मी बहुत ज़्यादा थी, इसलिए बच्चों के लिए दो-ढाई घण्टा बैठना और गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना मुश्किल हो रहा था। इसे ध्यान में रखते हुए बच्चों के लिए कुछ खाने का भी इन्तज़ाम किया गया।

सीखने-सिखाने की प्रक्रियाएँ

रूढ़िवादी कक्षा संस्कृति की एकरसता को तोड़ने के लिए बड़े और छोटे समूहों को मिलाने, एक साथ काम

करने, और एक दूसरे से सीखने की प्रक्रिया अपनाई गई। इस शिविर में सामाजिक-भावनात्मक सन्तुलन, मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर ध्यान केन्द्रित करने वाली विभिन्न गतिविधियाँ भी आयोजित की गईं। ऐसे मौक़े बनाए गए, जब बच्चे तरह-तरह की कविताएँ और कहानियाँ पढ़ें। भाषा सम्बन्धी गतिविधियाँ करने के दौरान इस बात का ख़ास ध्यान रखा गया कि जो भी निर्देश दिए जाएँ वे सरल, द्विभाषी और स्पष्ट हों, ताकि बच्चे उन्हें समझ सकें, और बेहतर तरीक़े से सीख सकें। गतिविधियों में बड़े समूहों की बातचीत को बढ़ावा दिया गया, और विभिन्न विषयों पर कहानियों या कविताओं को उनके अनुसार व्यवस्थित करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया गया। उन्हें उत्तर देने और छोटे समूह बनाने के लिए विषयवस्तु पर लघु नाटिका या नाटक का मंचन करने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया।

व्यक्तिगत कार्यों की बात करते हुए हिन्दी और अँग्रेज़ी वर्कशीटों का इस्तेमाल किया गया। यह वर्कशीटें बच्चों के स्तर अनुरूप सवालों से बनाई गई थीं। इनमें कुछ सवाल काफ़ी बुनियादी स्तर के, कुछ पिछली कक्षा के, और कुछ उस कक्षा स्तर के थे, जिसमें बच्चे वर्तमान में पढ़ रहे हैं। अगर मैं कक्षा 5 के बच्चों के लिए वर्कशीट की बात करूँ, वह कुछ बच्चों के लिए काफ़ी आसान और कुछ के लिए कठिन थी। इस वर्कशीट में वर्ण, मात्रा से लेकर रचनात्मक लेखन के सवाल थे, ताकि सभी बच्चे कुछ प्रयास कर पाएँ और अपनी क्षमताओं, विचारों और अभिव्यक्तियों को सही तरीक़े से साझा कर सकें। इसके साथ, इन वर्कशीटों में मातृभाषा में प्रतिक्रियाएँ भी स्वीकार की गईं, ताकि बच्चों के भाषा कौशल पर भी काम हो सके। विद्यार्थियों के लेखन कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ संचालित की गईं। जैसे– चित्रों पर प्रतिक्रिया देना, कहानी के पात्रों के बारे में चित्र बनाना या लिखना, कार्यपत्रकों में रंग भरना, क्ले मॉडलिंग, लेबलिंग, फ़्लैशकार्ड का मिलान, एक दूसरे से बातचीत, स्वतंत्र रूप से पढ़ना-लिखना, आदि। ये गतिविधियाँ व्यक्तिगत कार्यों के माध्यम से भाषा कौशलों को सुधारने के लिए थीं।

केन्द्र पर किए गए काम का उदाहरण

एक केन्द्र में 35 बच्चे थे। सबसे पहले, आकलन के ज़रिए हमने समझा कि इनमें से 8 बच्चे शुरुआती स्तर, 14 पिछली कक्षा के, और 13 बच्चे वर्तमान कक्षा स्तर पर थे। यह आकलन शिक्षकों की सहायता और बच्चों से मौखिक बातचीत करके किया गया। चूँकि शिक्षक अपनी कक्षा में पढ़ाते आ रहे हैं और उन्हें अपनी कक्षा के बच्चों के बारे में जानकारी होती है, इसलिए हम यह आकलन उनकी मदद से कर रहे थे।

पाठ 16

अगर पेड़ भी चलते होते

41CHVA

बच्चे आपस में बैठकर तरह–तरह की बातें करते हैं। उनकी कल्पनाएँ अजीब–अजीब होती हैं। कभी वे पक्षी बनकर आकाश की सैर करते हैं, कभी शेर बनकर जंगल का राजा बनते हैं। इस पाठ में भी वे कल्पना करते हैं कि अगर कहीं पेड़ चलने लगें तो क्या हो।

अगर पेड़ भी चलते होते।
कितने मजे हमारे होते ?

बाँध तने में उसके रस्सी,
जहाँ कहीं भी हम चल देते।

अगर कहीं पर धूप सताती,
उसके नीचे हम छिप जाते।

भूख सताती अगर अचानक,
तोड़ मधुर फल उसके खाते।

2. भालू ने खेली फ़ुटबॉल

0217CH02

सर्दियों का मौसम था। सुबह का वक्त। चारों ओर कोहरा ही कोहरा। एक शेर का बच्चा सिमटकर गोल-मटोल बना जामुन के पेड़ के नीचे सोया हुआ था।

इधर भालू साहब सैर पर निकल तो आए थे लेकिन पछता रहे थे। तभी उनकी नज़र जामुन के पेड़ के नीचे पड़ी।

वहीं कुछ जगहों पर हम वर्कशीट के माध्यम से लिखित आकलन करने का प्रयास कर रहे थे। इन वर्कशीटों में बच्चों को उस सामग्री से सम्बन्धित कुछ बुनियादी सवाल दिए गए थे, जो उन्होंने पिछली कक्षा में पढ़ी थी। इससे हमें यह आसानी से पता चल पाया कि किस बच्चे के साथ क्या काम करना है। इस जानकारी के आधार पर हमने एक सर्वसमावेशी कक्षा का संचालन किया। हमारे केन्द्र में कक्षा 1 से 5 तक के बच्चे शामिल थे। इन सभी बच्चों के समूह बच्चों के सीखने के स्तर के आधार पर बनाए गए, और इनमें कक्षा 3 का बच्चा भी कक्षा 5 के बच्चे के साथ बैठकर गतिविधियों में हिस्सा ले रहा था। हमने यह जानने की कोशिश की कि हमारे बच्चे मौखिक भाषा में कहाँ हैं, और उनके साथ क्या काम करने की ज़रूरत है।

हमने पाया कि बच्चे बात करने में झिझक महसूस कर रहे थे, और उनमें अभिव्यक्ति की कमी साफ़ नज़र आ रही थी। साथ ही, वे अभी उस स्तर पर नहीं थे कि अपनी वर्तमान कक्षा के स्तर का लेखन कर पाएँ। 4-5 बच्चों को छोड़कर सभी बच्चों में झिझक थी। इसीलिए हमने कुछ ऐसी गतिविधियाँ कीं जिनमें भाषाई विकास भी हो, और यह काम भी खेल-खेल में हो सके। केन्द्र की शुरुआत सर्कल टाइम की ऐसी गतिविधियों से होती थी, जो बच्चों के भावनात्मक और मानसिक विकास से सम्बन्धित थीं। सर्कल टाइम के दौरान, छोटे-छोटे बाल गीत, जैसे– चना कैसे बोया, आज हम भालू को गिनती सिखाएँगे, बॉम्बे की गुड़िया, आदि हावभाव के साथ गाए। इसी दौरान कुछ ऐसी खेल गतिविधियाँ करवाईं जो सर्कल में की जाती हैं। जैसे– घोड़ा बादाम खाए, लालाजी ने लड्डू खाए, नेता-नेता चाल बादल, आदि। हमारे केन्द्र की शुरुआत सर्कल टाइम से होती थी और समाप्ति फ़न टाइम से। फ़न टाइम में बच्चे अलग-अलग रचनात्मक गतिविधियों में हिस्सा लेते थे। इनमें पेपर फ़ोल्डिंग, मिट्टी के

खिलौने बनाना, चित्र बनाना, थम्ब आर्ट, आदि गतिविधियाँ की जाती थीं। बच्चों से अलग-अलग गतिविधियाँ करवाने का उद्देश्य उनके भाषाई कौशल को बढ़ाना था। वे अपनी बातों को इन गतिविधियों के माध्यम से सामने रखते थे। उदाहरण के लिए, 'मैं कौन हूँ, मुझे पहचानो', या किसी बच्चे की पीठ पर कुछ लिखा होता, बाक़ी बच्चे हावभाव करके उसे बताते, आदि।

बुनियादी स्तर वाले बच्चों के लिए किसी कविता या कहानी के आधार पर कुछ गतिविधियाँ तैयार की गई थीं। इनमें छूटे हुए वर्ण को पूरा करना, नए शब्द बनाना, किसी वाक्य से दूसरे नए वाक्य बनाना, किसी चित्र के बारे में अपने शब्दों में कुछ लिखना, चित्रों की लेबलिंग करना, हिन्दी-अँग्रेज़ी के मिलेजुले शब्द बनाना, आदि गतिविधियाँ की गईं।

कुछ दूसरी गतिविधियों के सहारे भी काम किया। मसलन, कहानी / कविता को बच्चों के समक्ष उचित हावभाव एवं सहायक सामग्री के साथ बताना। इस तारतम्य में, 'अगर पेड़ भी चलते होते', 'चल रे मटके टम्मक टूँ', 'भालू ने खेली फ़ुटबाल' जैसी कविताओं / कहानियों का प्रस्तुतीकरण बच्चों के बीच किया गया। इस प्रस्तुतीकरण ने बच्चों को काफ़ी लुभाया, और उन्होंने इन रचनाओं पर ख़ूब सारी प्रतिक्रियाएँ भी दीं। यह गतिविधि बच्चों के मौखिक भाषा विकास के लिए काफ़ी मददगार साबित हुई। शिक्षक साथियों के साथ मिलकर लिखने पर भी कुछ गतिविधियाँ की गईं, जो बच्चों के लिखने की प्रक्रिया में काफ़ी मददगार रहीं। चूँकि तीन स्तर के बच्चों के साथ काम किया जा रहा था, इसलिए लिखने की गतिविधि को भी इन स्तरों के अनुरूप ही बनाया गया था। जिन कविता-कहानियों पर बातचीत की, उन्हीं को आधार बनाकर लिखने की तरफ़ बढ़ा गया। इसके तहत, 'अगर पेड़ भी चलते होते' कविता पर शुरुआती स्तर वाले बच्चों के साथ चित्र बनाया, लेबलिंग की, और वर्णों को लिखकर शब्द पूरा किया। जो बच्चे पिछली कक्षा के स्तर पर थे, उन्होंने कुछ नए शब्द गढ़े, समान ध्वनि वाले शब्दों को ढूँढ़कर लिखा, कुछ वाक्य लिखे, और वे दिए गए निर्देश को देखकर जवाब भी लिख सके। वर्तमान कक्षा स्तर वाले बच्चों को पिछले व शुरुआती स्तर के बच्चों की मदद करने के लिए कहा, और उनकी

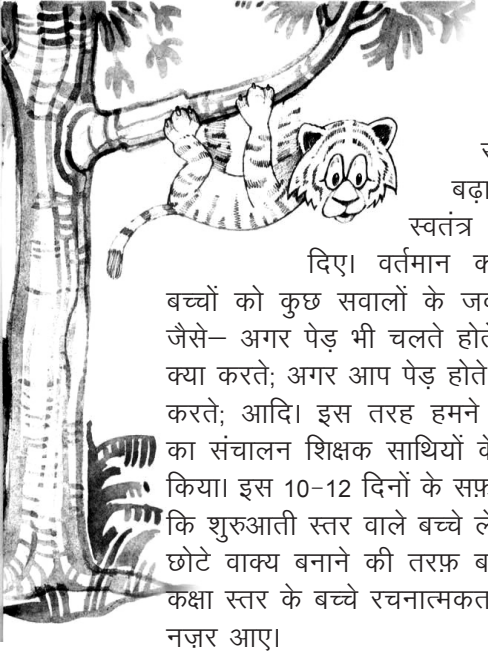

रचनात्मकता को बढ़ावा देते हुए उन्हें स्वतंत्र लेखन के मौक़े दिए। वर्तमान कक्षा स्तर वाले बच्चों को कुछ सवालों के जवाब भी देने थे। जैसे– अगर पेड़ भी चलते होते, तब वो क्या-क्या करते; अगर आप पेड़ होते, आप क्या-क्या करते; आदि। इस तरह हमने भाषा की कक्षा का संचालन शिक्षक साथियों के साथ मिलकर किया। इस 10-12 दिनों के सफ़र में हमने पाया कि शुरुआती स्तर वाले बच्चे लेबलिंग व छोटे-छोटे वाक्य बनाने की तरफ़ बढ़े, और पिछली कक्षा स्तर के बच्चे रचनात्मकता की ओर बढ़ते नज़र आए।

गणित की गतिविधियाँ करने से पहले भी बच्चों के सीखने के स्तर का आकलन किया गया। 35 बच्चों की कक्षा में 12 ऐसे थे, जिनको बुनियादी गणितीय कौशलों और 10 को स्थानीय मान समझने में परेशानी आ रही थी। वहीं 13 बच्चे ऐसे थे, जो कक्षा स्तर की गतिविधियाँ (जोड़ना-घटाना) कर पा रहे थे।

गणित शिक्षा के उद्देश्यों को खेल के रूप में प्रस्तुत किया। मक़सद था कि बच्चे सीखने में आनन्द के साथ-साथ सीखने की क्षमताओं को भी विकसित करने की ओर बढ़ सकें। यह तय किया कि सुगमकर्ता या शिक्षक साथी हर खेल को शुरू करने से पहले उसका प्रदर्शन ज़रूर करें। खेल विशेष के प्रत्येक दौर में धीरे-धीरे कठिनाई स्तर बढ़ाया गया। इससे बच्चों को सीखने का अवसर मिला, और उनके कौशलों में सुधार हुआ। उदाहरण के लिए, बुनियादी स्तर वाले बच्चों के साथ कुछ गतिविधियाँ कीं। इन गतिविधियों में पहले कम-ज़्यादा, छोटा-बड़ा, आदि की अवधारणा और उसके बाद संख्या समझ पर काम किया। इससे छोटी संख्या, बड़ी संख्या पर ज़्यादा काम करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी, क्योंकि बच्चों में कम-ज़्यादा, छोटा-बड़ा, आदि की समझ बन चुकी थी। यह भी ध्यान रखा कि बच्चों के शिक्षा स्तर के आधार पर ही उनके सीखने को बढ़ाया जाए। हमारी गतिविधियाँ संख्या बोध, गिनती, संचालन, पैटर्न पहचान, आकार, अंश, वज़न, माप, जैसी गणित की विभिन्न अवधारणाओं पर आधारित थीं।

इसी तारतम्य में, शिक्षक साथियों के साथ मिलकर बुनियादी स्तर के बच्चों के लिए कुछ गतिविधियाँ तैयार कीं। पानी की 10 ख़ाली बोतलें लेकर उनमें रेत डाली गई। इस गतिविधि के ज़रिए कम-ज़्यादा की अवधारणा की समझ पर बच्चों से बात की। उसी क्रम में, पत्थरों को क्रमागत रूप से जमाना, एक-एक की संगत करना, जैसी गतिविधियाँ भी शामिल की गईं। ऐसे बच्चे जो पिछली कक्षा के स्तर पर थे, उनके लिए पॉकेट बोर्ड, डीन्स ब्लॉक का इस्तेमाल किया गया। इनसे उनको इकाई-दहाई की अवधारणा को स्पष्ट करने में मदद मिली। वर्तमान कक्षा स्तर के बच्चों के साथ हमने कुछ सवाल भी रखे। जैसे– 127 + ... = 319; 426 – ..... = 291। ये सवाल एल्गोरिदम के हैं, पर यहाँ बच्चे को इन्हें समझकर हल करना होगा। मसलन, पहले सवाल में लगता है कि जोड़ना है, जबकि इसमें घटाने की क्रिया करनी है। अगर बच्चा सवाल समझ पाएगा, इसे कर लेगा। इस दृष्टि से ये

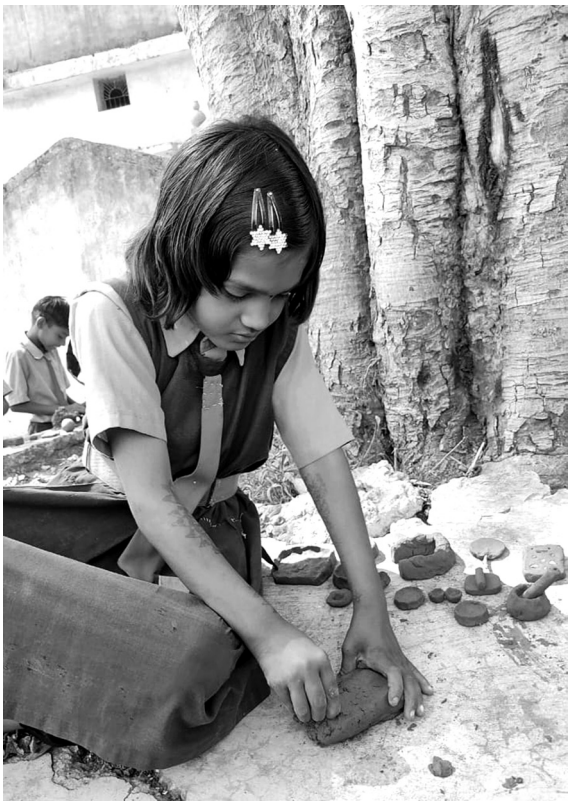

सवाल जोड़-घटा के सामान्य सवालों से थोड़े अलग थे। बच्चों में गणितीय सोच, तर्क और चिन्तन का विकास करने के लिए मैजिक बॉक्स और पज़ल्स का भी इस्तेमाल किया गया। चूँकि केन्द्र में कक्षा 1 से 5 तक के बच्चे थे, इसलिए सभी स्तरों को ध्यान में रखते हुए गतिविधियाँ चुनी गई थीं। इस पूरी प्रक्रिया के अन्त में पाया कि बच्चे अवधारणाओं को समझने की ओर बढ़े, और सक्रिय रूप से सवालों को हल करने की कोशिश करते नज़र आए।

एक अन्य केन्द्र पर आए बच्चों के आकलन में पाया गया कि कक्षा 1 से 3 तक के बच्चों के साथ संख्या समझ और स्थानीय मान पर काम करने की काफ़ी गुंजाइश है। इसलिए शिक्षक साथियों के साथ मिलकर सबसे पहले संख्या पूर्व अवधारणा पर काम किया। आसपास उपलब्ध कंकड़, तीली बण्डल, ख़ाली बोतल के ढक्कन जैसी अलग-अलग चीज़ों का इस्तेमाल करते हुए हल्का-भारी, कम-ज़्यादा, छाँटना, मिलान करना, वर्गीकरण, छोटा-बड़ा, आदि अवधारणाओं पर काम किया गया। संख्या पूर्व अवधारणाओं पर स्पष्टता बनने के बाद संख्याओं की समझ पर काम करना शुरू किया गया। इसमें 1 से लेकर 10 तक और आगे की गिनती के स्थानीय मान को लेकर काम किया गया। इस गतिविधि के लिए डीन्स ब्लॉक्स, तीली बण्डल, आदि का इस्तेमाल किया गया। बच्चों के साथ कुछ ऐसे खेल भी खेले, जिनमें बच्चों को साधारण जोड़-घटा करना होता था।

ये सारी गतिविधियाँ स्कूली गतिविधियों से कुछ अलग थीं। इन गतिविधियों में बच्चों को मूर्त वस्तुओं के माध्यम से गणितीय अवधारणाएँ जानने-समझने का मौक़ा मिल रहा था। बच्चे चीज़ों को आपस में मिला रहे थे, उठा रहे थे, छूकर देख रहे थे। शुरुआत में किसी भी अवधारणा की समझ के लिए यह मूर्तन काफ़ी ज़रूरी होता है। शिविर के अन्त में हमने देखा कि जो बच्चे गणित को लेकर थोड़ा डर या दूरी बनाते थे, वे भी इन गतिविधियों में शामिल हो रहे थे।

इस तरह सीखना-सिखाना केन्द्र ने विद्यार्थियों की न केवल तथ्यों को याद करने में मदद की, बल्कि उनकी समझ को भी विकसित किया। हमने पाया कि इस प्रक्रिया से गुज़रने के बाद विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ा। वे अपने विचारों को स्पष्टतः और सही ढंग से व्यक्त करने की ओर बढ़े। इस केन्द्र के ज़रिए उन्हें सामाजिक मेलजोल करने और नए दोस्त बनाने का मौक़ा भी मिला।

इस पूरे केन्द्र के संचालन में कुछ चुनौतियाँ भी सामने आईं। सबसे पहली शिक्षकों की अनुपलब्धता, क्योंकि इसका संचालन गर्मियों में होता है, और वही शिक्षक साथियों का ग्रीष्मकालीन अवकाश का समय होता है। हालाँकि इस चुनौती का सामना करते हुए शिक्षक

साथियों ने सभी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। दूसरी, इस केन्द्र में सीखते-सिखाते हुए कई बार निर्धारित गतिविधि को ज़रूरत के मुताबिक़ कुछ अलग ढंग से भी करना होता था। इसके लिए तैयार रहना भी एक बड़ी चुनौती थी।

एक शिक्षिका के अनुभव

केन्द्र में भागीदार एक शिक्षिका ने इस प्रयोग के बारे में कहा कि ग्रीष्म अवकाश में पढ़ने-पढ़ाने का अनुभव बहुत अच्छा था। नए-नए खेलों की मदद से बच्चों की पढ़ाई में रुचि जागृत करने, और ख़ाली समय में भी पढ़ने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने का काम इस केन्द्र के ज़रिए हुआ। बच्चे अपने साथियों के साथ समूह में बैठकर, अलग-अलग गतिविधियों के माध्यम से अलग-अलग स्तर के अनुरूप सीख सके। साथ ही, उन्हें ड्राइंग, पेंटिंग, पेपर क्राफ़्ट्स, ओरिगेमी (काग़ज़ को मोड़कर विभिन्न आकृतियाँ बनाना), मिट्टी से कलाकारी, आदि भी सीखने को मिले। बच्चे भाषा और गणित विशेषतौर पर सीख सके, क्योंकि इन विषयों को ध्यान में रखते हुए रोज़ बहुत-सी रोचक गतिविधियाँ की गईं। इस कड़ी में, रोज़ बाल गीत गाए गए, बाल गीत में आए कठिन शब्दों पर बातचीत की, बच्चों से वाक्य बनवाए, उन्हें विलोम शब्द बताए, और बातचीत करने व लिखने के नए अवसर प्रदान किए। अभी तक बच्चे केवल पुस्तक-आधारित लेखन करते थे, लेकिन केन्द्र में आने के बाद बच्चों ने अपनी रुचि के हिसाब से प्रसंगों पर लिखना और अभिव्यक्त करना शुरू किया। उन्होंने गाँव में आने वाली कुछ परेशानियों के बारे में भी अपनी बात रखी। एक तरह से देखा जाए तो केन्द्र में बच्चा अपने पूरे रुतबे में था। वह जो भी सामने देख रहा था, उसको लिखकर ला रहा था, और हमारे साथ साझा कर रहा था। केन्द्र में बच्चे बुनियादी गणितीय कौशल सीखने की तरफ़ भी बढ़े। खेल-खेल में गतिविधियों के माध्यम से वे जोड़ना-घटाना, इकाई, दहाई, सैकड़ा व स्थानीय मान की समझ की तरफ़ बढ़े। वे छोटी-छोटी गतिविधियों के माध्यम से समूह में काम कर रहे थे। सालभर जब बच्चों की कक्षाएँ चलती हैं, तब भी वे इन सभी तरीक़ों से ही सीखते हैं। लेकिन केन्द्र में हमने इन सारी अवधारणाओं को छोटी-छोटी गतिविधियों के माध्यम से सिखाया।

सभी चित्र : टिना

टिना राजेंद्र कटकवार, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बलौदा-बाज़ार, छत्तीसगढ़ में रिसोर्स पर्सन के रूप में पिछले 3 सालों से काम कर रही हैं। इससे पहले उन्होंने स्वदेस फ़ाउण्डेशन, लर्निंग लिंक्स फ़ाउण्डेशन और विभिन्न संस्थाओं में काम किया है। शिक्षा के क्षेत्र में टिना सालों से काम कर रही हैं। टिना ने अपनी पढ़ाई भी अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से की है। वे लगातार सीखती रहती हैं, उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में काम करने में काफ़ी आनन्द मिलता है।

सम्पर्क : tina.katkwar@azimpremjifoundation.org